गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

संगीता शर्मा
सहायक प्रोफेसर
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर

समाज निरन्तर प्रगतिशील है। हमारे समाज में जो भी प्रगति हुई है उसका कारण शिक्षा है। शिक्षा समाज का आधार है। यह सुधारों को जन्म देती है और नए विचारों (इनोवेशन) के लिए रास्ता बनाती है समाज में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का महत्व कमतर नहीं आंका जा सकता है। यही वजह है कि महान हस्तियों ने एक सभ्य समाज में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर विशद् चर्चा, लेखन, संगोष्ठियों में अपने विचार व्यक्त किये हैं। शिक्षा के कारण ही मनुष्य ब्रह्माण्ड की विशालता और परमाणुओं में इसके अस्तित्व के रहस्य का पता लगा सकता है। इस प्रकार शिक्षा बालक के गुणात्मक विकास के लिए आवश्यक है। गुणात्मक शिक्षा, लिंग, नस्ल, जातीयता, सामाजिक आर्थिक स्थिति या भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बिना प्रत्येक छात्र के सामाजिक भावनात्मक, मानसिक, शारीरिक एवं संज्ञानात्मक विकास पर केन्द्रित होती है।

शिक्षा स्वयं में जीवन है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में चरित्र, प्रवृति, कौशल और नैतिक गुणों का निर्माण करना है। जिसकी शिक्षा सहजीवी जीव प्रक्रिया द्वारा प्रारम्भ होती है और आगे भी इसी के साथ चलती रहती है। आज का मानव शिक्षा को भविष्य की दृष्टि से देख रहा है क्योंकि आज शिक्षा का विकास आर्थिक विकास की अगुवाई कर रहा है। अपरिचित बालकों को अपरिचित दुनिया के लिए शिक्षित करना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आधुनिक समाज की माँग है और चाहे कोई भी क्षेत्र हो गुणवत्ता की मांग हर जगह होती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से आशय शिक्षा में गुणों का विकास करना है, उन्हे शिक्षा मे समावेशित करना है ताकि छात्रों एवं शिक्षा के उददेश्यों की प्राप्ति हो सके। शिक्षा में गुणवत्ता का सम्बन्ध शिक्षा के उददेश्यों से ही है। विभिन्न मान्यताएँ और मूल्य लोकतन्त्र में शिक्षा की धारणा को आधार बनाते हैं इसलिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता यह सुनिश्चित करती है कि अभ्यर्थी की क्षमता को अधिकतम करने के लिए खोला जाए ताकि उसकी सृजनात्मकता को बढ़ावा मिले। आधुनिक युग में किसी भी देश की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण कहना गलत होगा क्योकि वर्तमान शिक्षा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति करने में असफल रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उसी शिक्षा का समावेश होता है जो शिक्षा शिक्षण अधिगम में छात्रों की रूचि व क्षमताओं को समझे व समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करे और छात्रों को जीविकोपार्जन योग्य बनाकर देश के लिए एक सुदृढ़ नागरिक तैयार कर सके।

यूनेस्को की रिपोर्ट 1996 में सीखने की सामग्री के स्तम्भों को भीतर के खजाने को सीखने का संकेत देना हैं :-

1. Learning to be (होना सीखना)
2. Learning to learn (सीखना सीखना)
3. Learning to Know (जानना सीखना)
4. Learning to Live together (साथ रहना सीखना)

इन स्तम्भों की प्राप्ति का सम्बन्ध शिक्षा में गुणवत्ता से ही जिसे हम सब एक साथ रहकर, करके, बनाकर, जानकर सीख सकते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मतलब आज की शिक्षा का विकल्प यानि जो आज नहीं हो रहा है, उसे सम्भव बनाना है। अर्थात् किसी गुण में उत्कृष्टता प्राप्त करना जो कि हमे शिक्षा में चाहिए और शिक्षा में गुणात्मकता लाने के लिए हमें पाठ्यक्रम, वातावरण, शिक्षक एवं छात्रों के मध्य गुणवत्ता लानी होगी। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का प्रमुख आधार ही पाठयक्रम है, जिसके दवारा समस्त विद्यालय एवं शिक्षा का संचालन होता है। इसलिए शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए जरूरी है कि पाठयक्रम का निर्माण छात्रों के स्तर के अनुसार एवं समाज की आवश्यकता के अनुसार किया जाए। शिक्षा की गुणवत्ता की अगली कड़ी में वातावरण का प्रमुख होना आवश्यक है इसलिए शिक्षा के उद्देश्यों को निर्माण, भौतिक, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक वातावरण के आधार पर किया जाए। इसी प्रकार शिक्षा की गुणवत्ता की अगली कड़ी में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण सूत्रधारक की होती है, जो समाज के लिए योग्य नागरिकों को तैयार करता है। शिक्षक ज्ञान को एक पीढ़ी मे दूसरी पीढ़ी मे स्थानान्तरण करता है इसलिए शिक्षा में गुणवत्ता लाने की क्रियान्विति का उत्तरदायित्व शिक्षक का होता है। शिक्षा की गुणवत्ता की अंतिम कड़ी में जिसमें छात्रों में अगर सीखने की जिज्ञासा हो, चरित्र अध्ययनशील हो तो शिक्षा में गुणवत्ता होना निश्चित है यह तभी सम्भव है जब कि व्यक्तित्व में गुणवत्ता का समावेश हो।

निष्कर्ष :- शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वागीण विकास करना होता है, यह तभी सम्भव है जब छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वह नहीं है जो सिर्फ ज्ञान पर आधारित हो अपितु वह ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक हो जो छात्रों को समाज में संघर्ष करने योग्य बना सके। देश के लिए भावी कर्णधार को तैयार कर सके। जिसका निर्माण अभी तक नहीं हुआ है I

संदर्भ सूची

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
- त्यागी डॉ. गुरसनदास, नन्द डॉ. विजय कुमार, उदीयमान भारत में शिक्षा तृतीय संस्करण 2009, विनोद पुस्तक मन्दिर
- http://www.sarkariyojanaa.com, http://www.rashtryashiksha.com, http://drishtias.com